इकाई 25 कथा साहित्य तथा अन्य विधाएँ : समस्याएँ और सीमाएँ

इकाई की रूपरेखा

25.0 उद्देश्य
25.1 प्रस्तावना
25.2 गद्य साहित्य के अनुवाद की प्रविधि
  25.2.1 पूरी रचना को एक इकाई मानना
  25.2.2 पाठ के मूल मंतव्य को समझना
  25.2.3 समतुल्य प्रतीत होने वाली भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरतना
  25.2.4 मुहावरे तथा लोकोक्तियों का पूर्ण पुनर्विन्यास
  25.2.5 अनूदित पाठ में सर्जनात्मक प्रयोग
  25.2.6 अनूदित पाठ को अलंकृत अथवा अतिरंजित न करना
25.3 सारांश
25.4 कुछ उपयोगी पुस्तकें
25.5 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

25.0 उद्देश्य

यह इकाई कथा साहित्य तथा अन्य गद्य विधाओं के अनुवाद से संबंधित है। अन्य गद्य विधाओं से अभिप्राय निबंध, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र आदि से है। कथा साहित्य से इतर गद्य विधाओं की अनेक विशेषताएँ यथा कथात्मकता, वातावरण-सृष्टि, वर्णन-शैली आदि कथा साहित्य की विशेषताओं से मिलती-जुलती हैं। अतएव गद्य साहित्य के अनुवाद की प्रविधि से परिचित हो जाने पर विभिन्न गद्य-विधाओं की कृतियों का अनुवाद किया जा सकता है। यही कारण है कि इस इकाई में विभिन्न गद्य विधाओं की अनुवाद-प्रक्रिया का अलग-अलग अध्ययन न करके एक साथ अध्ययन किया जा रहा है। अतः इस इकाई के अध्ययन से आप :

- गद्य साहित्य के तात्पर्य को बता सकेंगे,
- गद्य साहित्य की अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को समझा सकेंगे,
- गद्य साहित्य के अनुवाद के समय उठने वाली विविध समस्याओं की समीक्षा कर सकेंगे,
- गद्य साहित्य की समतुल्य प्रतीत होने वाले भाषिक इकाइयों की समीक्षा कर सकेंगे,
- पाठ के मूल मंतव्य के समझते हुए मुहावरे और लोकोक्तियों के पूर्ण पुनर्विन्यास को बता सकेंगे,
- अनूदित पाठ में सृजनात्मकता के समावेश का मूल्यांकन कर सकेंगे, तथा
- गद्य साहित्य के अनुवाद का अभ्यास कर सकेंगे।

25.1 प्रस्तावना

सामान्यतः यह समझा जाता है कि कविता की तुलना में गद्य साहित्य का अनुवाद करना सरल है। इस धारणा का मूल आधार यह है कि कवि जहाँ बहुत कुछ अनकहा छोड़ देता है, अपनी बात को मिथक और प्रतीकों के माध्यम से कहता है, ऐसे छंद-विधान तथा आलंकारिक शैली का आश्रय लेता है कि उसे लक्ष्य भाषा में अंतरित करना असंभव होता है वहाँ गद्य साहित्य के अनुवाद के समय ये परेशानियाँ नहीं आतीं। यह भी माना जाता है कि गद्य साहित्य के अनुवादक में वैसी सर्जनात्मक प्रतिभा का होना जरूरी नहीं है जैसी काव्यानुवादक के लिए जरूरी है। ये कुछ ऐसे कारण हैं जिनके फलस्वरूप गद्य साहित्य की अनुवाद-प्रक्रिया और समस्याओं पर बहुत कम विचार हुआ है। प्रायः यह भुला दिया जाता है कि गद्य के सभी रूप एक जैसे नहीं होते। प्रयोजनपरक गद्य तथा सृजनात्मक गद्य की प्रकृति एक-दूसरे से पर्याप्त भिन्न होती है। यही कारण है कि प्रयोजनपरक गद्य रूपों यथा प्रौद्योगिकी, आयुर्विज्ञान विधि, बैंकिंग, पत्रकारिता आदि से संबंधित रचनाओं के अनुवाद के समय जहाँ कल्पना का प्रयोग नगण्य सा रहता है वहाँ सर्जनात्मक गद्य रूपों यथा कहानी, उपन्यास, निबंध, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, यात्रावृत्त आदि के अनुवाद के समय अनुवादक को कल्पना-जगत में भी भरपूर विचरण करना पड़ता है। वस्तुतः सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद का काम हमेशा कठिन होता है — चाहे वह कविता का हो या गद्य का। गद्य साहित्य के अनुवाद के समय सबसे बड़ी चुनौती सांस्कृतिक

संदर्भों की होती हैं। दो भिन्न देशों में रहने तथा अलग-अलग भाषा बोलने वालों का सामाजिक जीवन एक जैसा नहीं होता। उनके आपसी व्यवहार में पर्याप्त अंतर आता है। उदाहरण के लिए योरोपीय लोगों में पारस्परिक संबंधों में जैसी औपचारिकता पाई जाती है वैसी भारतीय जीवन में नहीं पाई जाती। रिश्तेदारी का जैसा वैविध्यपूर्ण भरा-पूरा संसार भारत में है वैसा यूरोप में नहीं है। भाषा का शब्द भंडार आवश्यकतानुरूप आकार ग्रहण करता रहता है। नई स्थितियों में या तो अनेक नए शब्द गढ़ लिए जाते हैं या फिर दूसरी भाषाओं से ज्यों के त्यों ले लिए जाते हैं। यही कारण है कि भाव-जगत को मूर्त रूप देने के लिए तो अनुवादक स्रोत तथा लक्ष्य भाषा में समरूपता खोजने का प्रयत्न करता है किन्तु वो, प्रथाओं एवं परंपराओं को व्यक्त करने के लिए स्रोत भाषा के शब्दों को ज्यों का त्यों ग्रहण करते हुए वहीं पर कोष्ठक में अथवा पादटिप्पणी में व्याख्या कर देता है। अनुवादक को मूल रचना के संदेश को संप्रेषित करने के साथ-साथ उसके अभिव्यंजना शिल्प की खूबियों को भी बरकरार रखने का प्रयत्न करना पड़ता है। यहीं पर अनूदित पाठ में सृर्जनात्मक प्रयोग का सवाल पैदा होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि काव्यानुवाद के समान गद्य साहित्य के अनुवाद का काम भी नानाविध चुनौतियों से भरा है। इस खंड में इससे पहले की इकाइयों में आप मानविकी तथा समाज-विज्ञान विषयक अवतरणों के अनुवाद की, काव्यानुवाद तथा नाट्यानुवाद की विभिन्न समस्याओं और सीमाओं विश्लेषण कर चुके हैं। यहाँ आप कथा-साहित्य संबंधी अनुवाद की विभिन्न समस्याओं और सीमाओं की समीक्षा करेंगे।

25.2 गद्य साहित्य के अनुवाद की प्रविधि

यों तो अच्छा अनुवाद करने की कला अभ्यास से ही आती है, फिर भी इतना निर्विवाद है कि प्रत्येक कार्य की अपनी अलग प्रविधि होती है। गद्यानुवाद भी इसका अपवाद नहीं है। अनुवाद-प्रक्रिया के दो सोपान हैं — (i) अर्थग्रहण तथा (ii) संप्रेषण। रचना के मर्म को भली-भाँति समझना अर्थग्रहण है तो इस समझ को प्रभावी रूप में व्यक्त करना संप्रेषण है। अनुवाद के लिए किसी भी रचना को क्यों न चुना जाए, इन दोनों बातों का ध्यान प्रत्येक अनुवादक को रखना होगा। रचना का अर्थ समझने के लिए अनुवादक को स्रोत भाषा की भाषिक संरचना पर पूर्ण अधिकार होने के अलावा सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक विरासत से भली-भाँति परिचित होना चाहिए। भाषिक संरचना के संदर्भ में यह ध्यातव्य है कि अनुवादक को लिखित तथा मौखिक दोनों ही रूपों की अंतरंग पहचान होनी चाहिए। ऐसा न होने पर अर्थ का अनर्थ हो सकता है। एक उदाहरण लीजिए। एक बार किसी अनुवादक के सामने अंग्रेजी की किसी कहानी का अनुवाद करते समय एक वाक्य आया, (He has gone down)। यह वाक्य कहानी के किसी पात्र द्वारा किसी दूसरे पात्र के बारे में पूछे गए प्रश्न का उत्तर था। अनुवादक ने इसका अनुवाद "वह नीचे गया है" कर दिया। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह अर्थ का अनर्थ था। ईसाई धर्मावलम्बी शव को जलाते नहीं, जमीन में गाड़ते हैं। अतएव उनके यहाँ किसी व्यक्ति के दिवंगत हो जाने पर बोलचाल की भाषा में (Gone down) कहा जाता है। उक्त प्रसंग में भी यही कहा गया था। यदि अनुवादक को मौखिक मुहावरे तथा सांस्कृतिक परंपरा का ज्ञान होता तो वह ऐसी भूल न करता और सही-सही अनुवाद करते हुए लिखता "उसकी मृत्यु हो गई है।"

अनुवादक को लक्ष्य भाषा की विरासत तथा अभिव्यंजना शैली पर भी अचूक अधिकार होना चाहिए जिससे रचना के संदेश को सहज शैली में संप्रेषित किया जा सके। किसी उपन्यास में एक पात्र ने फोन पर कहा, (Marshall this side)। अनुवादक ने अनुवाद किया, "इस तरफ से मार्शल बोल रहा हूँ।" हिंदी में इस प्रकार की अभिव्यक्ति का चलन नहीं है। अनुवाद होना चाहिए था — "मार्शल बोल रहा हूँ।"

प्रत्येक रचना एक स्वतःपूर्ण इकाई होती है। उसके विभिन्न अंशों में सामाजिक परिवेश अंतर्ग्रथित होता है। इसे आत्मसात करते हुए रचना के मूल स्वर की पहचान, समतुल्य भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रतिस्थापन, यथास्थान सर्जनात्मक प्रयोग तथा अलंकरणरहित अभिव्यक्ति का प्रश्रय लेने पर ही कोई अनुवादक स्रोत भाषा की किसी रचना का लक्ष्य भाषा में प्रभावी अनुवाद कर सकता है। इस प्रकार गद्य साहित्य की अनुवाद-प्रक्रिया के छः मुख्य सिद्धान्त कहे जा सकते हैं। ये हैं — (i) पूरी रचना को एक इकाई मानना (ii) पाठ के मूल मंतव्य को ग्रहण करते हुए उसके अनुरूप अनुवाद करना (iii) समतुल्य प्रतीत होने वाली भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरतना (iv) मुहावरे तथा लोकोक्तियों का पूर्ण पुनर्विन्यास, (v) अनूदित पाठ में सर्जनात्मक प्रयोग, तथा (vi) अनूदित पाठ को अपनी ओर से अलंकृत न करना।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित कथनों में से कुछ सहीं हैं कुछ गलत। सही कथन के आगे सही का चिह्न (√) लगाइए :

   क) गद्य साहित्य में स्रोत तथा लक्ष्य भाषा के मिथक तथा प्रतीक एक समान होते हैं। ( )

   ख) सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद हमेशा कठिन होता है, चाहे वह कविता का हो या गद्य का। ( )

   ग) स्रोत भाषा की किसी रचना का अर्थ समझने के लिए उस भाषा के शब्द-भंडार से परिचित होना पर्याप्त है। ( )

   घ) अच्छे अनुवाद के लिए अनुवादक को स्रोत भाषा के लिखित तथा मौखिक दोनों रूपों की अंतरंग पहचान होनी चाहिए। ( )

2) गद्य साहित्य की अनुवाद-प्रक्रिया के मुख्य सिद्धांतों का लगभग पाँच-छह पंक्तियों में नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

25.2.1 पूरी रचना को एक इकाई मानना

प्रायः यह देखने में आया है कि गद्यानुवाद के समय अनुवादक शब्द प्रति शब्द प्रति शब्द पढ़ता चला जाता है और अनुवाद करता जाता है। अनुवाद करने की यह पद्धति सही नहीं है। किसी भी साहित्यिक रचना का अनुवाद-भले ही वह पद्य हो या गद्य—करते समय पूरी रचना को एक इकाई के रूप में ग्रहण करना चाहिए। फिर उसके विभिन्न भागों को अंश-अंशी रूप में विभाजित करना चाहिए। इसका कारण यह है कि रचना के विभिन्न अंश एक दूसरे के साथ इस प्रकार जुड़े होते हैं कि एक को जाने बिना दूसरे का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। किसी कहानी या उपन्यास का पहला अनुच्छेद रचना के अंतिम अनुच्छेद से जुड़ा हो सकता है। ऐसी स्थिति में पहला अनुच्छेद पूरी रचना की कुंजी होता है। उदाहरण के लिए एक अवतरण लीजिए :

> On the evening that I am considering I passed by some ten or twenty cosy barns and sheds without finding one to my liking: for Worcestershire lanes are devious and muddy, and it was nearly dark when I found an empty cottage set back from the road in a little bad raggled garden. There had been heavy rains earlier in the day and the straggling fruit trees still wept over it.
>
> —A Night At A Cottage by Richard Hughes

यह अवतरण रिचर्ड ह्यूज़ द्वारा आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई कहानी A Night At A Cottage का पहला अनुच्छेद है। पूरी कहानी पढ़े बिना न तो कथा नायक द्वारा सड़क से कुछ हट कर किसी खाली झोंपड़ी की तलाश का कारण समझ में आ सकता है और न घुमावदार कीचड़ भरी गलियों का वातावरण प्रस्तुत करने का रहस्य उजागर हो सकता है। खाली झोपड़ी की खोज का रहस्य छः अनुच्छेद पढ़ने के बाद खुलता है जब पाठक को कथानायक के आबारागर्द व्यक्ति होने का पता लगता है। कीचड़ भरे वातावरण को प्रस्तुत करने की सार्थकता अंतिम वाक्य से स्पष्ट होती है जब भूत के हाथों को कलाई तक कीचड़ से सना दिखलाया गया है। यह जानकारी अनुवादक के लिए बहुत काम की है क्योंकि इसके माध्यम से उसे खाली, कीचड़ भरे आदि विशेषणों की महत्ता का ज्ञान होता है जिसके अभाव में वह असावधानीवश इन्हें छोड़ने या यत्किंचित परिवर्तित करने की भूल कर सकता था।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित प्रश्नों में से कुछ सही हैं और कुछ गलत। सही कथन के आगे सही का निशान (√) लगाइए :

   i) गद्यानुवाद के समय अनुवादक को शब्द-प्रति-शब्द पढ़ते तथा अनुवाद करते जाना चाहिए। ( )

   ii) किसी कहानी या उपन्यास का पहला अनुच्छेद रचना के अंतिम अंश से जुड़ा हो सकता है। ( )

   iii) कई बार कहानी या उपन्यास के अंतिम अनुच्छेद से प्रयुक्त विशेषणों की सार्थकता और उनके अनुवाद में सावधानी बरतने की आवश्यकता की कुंजी हाथ लगती है। ( )

2) किसी गद्य रचना का अनुवाद करते समय पूरी रचना को एक अविभाज्य इकाई मान कर पढ़ना क्यों जरूरी होता है? लगभग तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

25.2.2 पाठ के मूल मंतव्य को समझना

अनुवाद करते समय मूल पाठ को बारंबार पढ़ कर लेखक के मंतव्य को भली-भांति समझना चाहिए। अनुवादक का लक्ष्य निहितार्थ को पाठक तक संप्रेषित करना है। साहित्यिक गद्य के अनुवाद के दौरान इस ओर विशेष ध्यान देना होता है। इसका कारण यह है कि सर्जनात्मक रचनाओं में कल्पना नित नए आकाश छूती रहती है। उसमें उपमा, रूपक, मिथक, बिम्ब, मानवीकरण आदि का ऐसा सहज संगुंफन होता है कि लक्ष्य भाषा के समतुल्य प्रतिशब्द रख देने भर से काम नहीं चलता। उदाहरण के लिए एक अवतरण लीजिए :

> "The jungle is full of traps. And it is a battle-field on which rot and growth march hand in hand. All the plants compete, steal sunlight from each other,

choke each other and then hungrily consume the cadavers of their victims in order to live."

—My Ordeal In A Jungle Air Crash by Juliane Keopoke

आइए, सबसे पहले इस अनुच्छेद में प्रयुक्त कठिन शब्दों के कोषगत अर्थों से परिचित हो लिया जाए :

traps	जाल, फंदा, पाश
rot	गलना, सड़ना
growth	वृद्धि, वर्धन, विकास, उत्पादन, पैदावार
march	कूच करना, प्रयाण करना
hand in hand	हाथ में हाथ डाले, साथ-साथ
plants	पौधा, पादप, वनस्पति
compete	स्पर्धा करना, होड़, प्रतिस्पर्धा
steal	चुराना
sunlight	सूर्य का प्रकाश
choke	दम घोटना, गला घोटना
consume	उपभोग करना, खर्च करना
cadavers	शव, लाश

अब यदि इन कोषगत अर्थों का इस्तेमाल करते हुए अनुवाद किया जाए तो अनूदित पाठ का रूप यह होगा : "जंगल जालों से भरा होता है और यह एक लड़ाई का मैदान है जहां सड़ांध तथा विकास हाथ में हाथ देकर कूच करते हैं। सारे पेड़-पौधे एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं। एक दूसरे से सूर्य का प्रकाश चुराते हैं, एक दूसरे का गला घोंटते हैं और फिर शिकार किए गए मनुष्यों की लाशों को भुक्खड़ों की तरह खाते हैं जिससे कि वे जीवित रह सकें।"

अब यदि अनूदित पाठ को मूल पाठ से मिला कर देखा जाए तो पता लगेगा कि अनूदित पाठ हमारे मन पर मूल जैसा प्रभाव नहीं छोड़ता। ऐसा लगता है कि अनूदित पाठ में मूल रचना की हत्या हो गई है। ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि अनूदित पाठ में मूल रचना की रमणीयता का अभाव है। रमणीयता रचना के मूल मंतव्य को समझ कर अनुवाद करने से आती है। यह अंश 'My Ordeal In A Jungle Air Crash' में से लिया गया है। इस रचना का उद्देश्य जंगल में हुई हवाई दुर्घटना के समय जीवित बचे व्यक्ति की उन मुसीबतों का वर्णन करना है जो उसे जंगल में दर-दर भटकते भुगतनी पड़ती हैं। इस निमित्त लेखक ने जंगल की कल्पना एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हुए छीना-झपटी करने वाले स्वार्थी मानव-संसार के रूप में की है। जंगल के पेड़-पौधों को मनुष्य के समान क्रिया-कलाप करते दिखाया है। लेखक की विशेषता इस बात में है कि सभी क्रियाएँ जंगल की सहजता का अंश बन कर आई हैं। अतएव इस रचना का अनुवाद करते समय शाब्दिक समतुल्यता के साथ-साथ निहितार्थ तथा जंगल की सहजता को बरकरार रखना ज़रूरी होगा। परिणामतः यहाँ traps के कोषगत अर्थ जाल, फंदा या पाश का प्रयोग न करके निहितार्थ मुसीबत का प्रयोग करना ही ठीक होगा। इसी प्रकार से Choke का अर्थ गला घोटना ठीक नहीं होगा। जंगल में पेड़-पौधे किसी का गला नहीं घोटते। विकास की प्रक्रिया के दौरान कुछ पेड़-पौधे बढ़ते चले जाते हैं, कुछ रुक जाते हैं और कुछ दम तोड़ बैठते हैं। पेड़-पौधों की विकास-गति के रुकने अथवा दम तोड़ने का मुख्य कारण पर्याप्त रोशनी का न मिलना है। तेज़ी से बढ़ते हुए पेड़-पौधे अपने आसपास के पेड़-पौधों को अपेक्षित रोशनी नहीं मिलने देते। इन बातों का ध्यान रखते हुए अनुवाद करने पर अनूदित पाठ का रूप इस प्रकार होगा :

जंगल में तरह-तरह की मुसीबतें होती हैं। यह एक युद्ध-भूमि है जहाँ ह्रास और विकास की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है। सारे पेड़-पौधे होड़ करते हुए एक दूसरे से रोशनी चुराते हैं, एक दूसरे को रोकते हैं और फिर जिंदगी बसर करने के लिए मरमुखों के समान अपने शिकार की लाश से भोजन ग्रहण करते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) अनुवाद करने से पहले लेखक के मूल मंतव्य को समझना क्यों जरूरी है ?

.....

.....

2) निम्नलिखित वाक्य का दिये गये रिक्त स्थान पर हिंदी में अनुवाद कीजिए तथा इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से मिलाइए —

How ardently I wished to land at the airport of Cape Town and travel on foot all over the vast African continent to explore every nook and corner of that land of wonders, where a lion may pounce upon a lonely traveller from any thicket at any time.

.....

.....

.....

.....

.....

25.2.3 समतुल्य प्रतीत होने वाली भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरतना

अनेक बार दो भाषिक अभिव्यक्तियों में ऊपरी समानता के बावजूद प्रयोजन तथा प्रकार्य एक जैसे नहीं होते। उदाहरण के लिए यदि किसी योरोपीय कथाकार ने किसी पात्र के चरित्रगत वैशिष्ट्य को उभारने के लिए 'He is an owl' लिखा है तो हिन्दी में इसे 'वह उल्लू है' के रूप में अनूदित करना ठीक नहीं होगा। इसका कारण यह है कि प्रकार्य तथा प्रयोजन की दृष्टि से अंग्रेजी 'owl' के हिन्दी प्रतिशब्द 'उल्लू' में समतुल्यता नहीं है। योरोपीय संस्कृति में उल्लू बुद्धिमत्ता का प्रतीक है जबकि हमारी संस्कृति में वह मूर्खता का द्योतक है। अतएव यहाँ पर या तो बुद्धिमत्ता को व्यक्त करने वाला कोई दूसरा उपमान ढूंढना होगा या फिर उपमान का मोह छोड़कर अपनी बात सीधे स्पष्ट रूप में कहनी होगी।

इसी प्रकार से यदि किसी योरोपीय लेखक द्वारा लिखी गई अंग्रेजी की किसी कहानी में वर्षा का वर्णन किया गया है तो उसका ज्यों का त्यों अनुवाद करने से पहले उस वर्णन के प्रकार्य से परिचित होना जरूरी है। इसका कारण यह है कि योरोप में वर्षा उदासी का प्रतीक है। जबकि हमारे यहाँ उसका वर्णन उल्लास के प्रतीक रूप में किया जाता है। इसी प्रकार अनेक पशु-पक्षी, पादप-पुष्प आदि भी ऊपरी समतुल्यता तो रखते हैं, किन्तु वस्तुतः होते नहीं।

बोध प्रश्न 4

1) समतुल्य प्रतीत होने वाली भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरतना क्यों ज़रूरी है?

.....

.....

.....

2) किसी अनुवादक ने अंग्रेजी के वाक्य 'He is so full of love that we can call him cupid' का अनुवाद इस प्रकार किया है—"वह प्रेम में इतना सराबोर है कि हम उसे कामदेव कह सकते हैं।" क्या यह अनुवाद सही है? यदि नहीं तो क्यों ? उसका सही रूप क्या होना चाहिए? लगभग पाँच-छह पंक्तियों में लिखिए —

.....

.....

.....

.....

.....

.....

25.2.4 मुहावरे तथा लोकोक्तियों का पूर्ण पुनर्विन्यास

अपने विचारों को प्रभावी शैली में संप्रेषित करने के लिए सर्जक साहित्यकार प्रायः मुहावरे तथा लोकोक्तियों का प्रयोग करता है। मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ किसी भाषा-भाषी समाज के गहन जीवन-अनुभव का निचोड़ होती हैं। इनके प्रयोग से संप्रेषण में पैनापन आता है। यों तो इनका प्रयोग कविता तथा गद्य साहित्य दोनों में ही किया जाता है किन्तु गद्य साहित्य में इनकी प्रचुरता प्रायः अधिक होती है। इसका कारण यह है कि गद्य साहित्य में जीवन के अनुभव अपेक्षाकृत अधिक सहज एवम् यथार्थ रूप में अभिव्यक्त होते हैं।

मुहावरे-लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद न करके प्रकार्य को ध्यान में रखना चाहिए। फिर यह देखना चाहिए कि स्रोत भाषा में किसी भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए जिस मुहावरे या लोकोक्ति का प्रयोग किया गया है उसके अनुरूप अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा में है या नहीं। जीवन-अनुभव सभी भाषा-भाषियों के एक जैसे होते हैं। ऐसी स्थिति में यह संभव है कि लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के अनुरूप कोई अभिव्यक्ति मिल जाए। कुछ उदाहरण लीजिए :

Errors and Omissions accepted	भूल चूक लेनी देनी
To escape by a hair's breadth	बाल बाल बचना
Better late than never	देर आये दुरुस्त आये
Jack of all trades	हरफ़न मौला
To breathe one's last	चल बसना।

लेकिन दो भिन्न भाषा-भाषियों की ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक विरासत एक जैसी नहीं होती। इस भिन्नता के फलस्वरूप किसी प्रकार्य के लिए एक जैसे उपमानों या प्रतीकों का प्रयोग नहीं होता। दो भिन्न संस्कृतियों में प्रयुक्त अलग-अलग उपमानों के प्रयोग के कारण मुहावरे तथा लोकोक्तियों के रूप में भिन्नता आ जाती है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी भाषा में सीधेपन के भाव को व्यक्त करने के लिए मेमने (Lamb) का प्रयोग उपमान रूप में किया जाता है, किन्तु हिन्दी में इस भाव को व्यक्त करने के लिए, गाय/गऊ उपमान का प्रयोग होता है। अतएव Like a lamb का हिन्दी अनुवाद 'गाय/गऊ जैसा' होगा। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि सर्वत्र लैंब (Lamb) के स्थान पर गाय का प्रयोग नहीं किया जा सकता। हमें हमेशा यह देखना होगा कि मुहावरे का प्रयोग किस प्रकार्य के लिए किया गया है। कहीं यह निर्बलता के भाव को व्यक्त करने के लिए हो सकता है, कहीं दब्बूपन के लिए, कहीं ईसामसीह के लिए। अतएव इन सब स्थानों पर अभिव्यक्ति का रूप अलग-अलग होगा। कुछ उदाहरण लीजिए :

i) God tampers the wind to the shorn lamb	i) निर्बल के बल राम/जाको राखे साइयां, मार सके न कोय; बाल न बांका कर सके, जो जग वैरी होय।
ii) The Lamb/Lamb of the God	ii) ईसामसीह
iii) Wolf in a lamb's skin	iii) रंगा सियार
iv) Mutton dressed like a lamb	iv) बूढ़ी घोड़ी लाल लगाम
v) As will be hanged for a sheep as for a lamb.	v) चोरी करनी हो तो लाख की करो, एक की क्या।

बोध प्रश्न 5

1) मुहावरे तथा लोकोक्तियों का अनुवाद करते समय किस सिद्धांत का पालन करना चाहिए? लगभग चार-पाँच पंक्तियों में लिखिए —

.....

.....

.....

.....

.....

2) निम्नलिखित मुहावरों/अभिव्यक्तियों के दिए गए स्थान पर हिन्दी समानार्थी लिखिए –

i) to answer the call of nature .....

ii) to become barren .....

iii) to be in a frenzy .....

iv) to be in the dumps .....

v) to be too meek to speak .....

vi) to clear up .....

vii) handsome is that handsome does .....

viii) to monkey about .....

ix) to stand up the gaff .....

x) with open arms .....

25.2.5 अनूदित पाठ में सर्जनात्मक प्रयोग

अनुवादक अनुसृजक होता है। जिस प्रकार मूल लेखक किसी विषय पर चिंतन-मनन करता हुआ कथ्य के विभाजन, उपस्थापन, शिल्पगत प्रयोग आदि के बारे में निरन्तर सोचता-विचारता रहता है उसी प्रकार से अनुवादक को भी निरन्तर यह सोचते रहना चाहिए कि क्या मूल पाठ को ज्यों का त्यों अपनाना ठीक होगा या कुछ जोड़ना या छोड़ना होगा। अपनी ओर से जोड़ा गया अंश पैबंद तो नहीं लगेगा तथा किसी अंश को छोड़ देने से लेखकीय मंतव्य को क्षति तो नहीं पहुँचेगी अनुवादक को यह भी सोचना चाहिए कि ऐसा करने से रसास्वादन में बाधा तो नहीं आएगी। मूल पाठ में प्रयुक्त सांस्कृतिक शब्दावली का अनुवाद किस प्रकार किया जाए? क्या उनका इस्तेमाल ज्यों का त्यों करते हुए पादटिप्पणी दे दी जाए या रचना के अंत में परिशिष्ट लगा कर उन शब्दों की व्याख्या कर दी जाए या फिर अनूदित पाठ के प्रारंभ में मूल रचना के भौगोलिक, सामाजिक परिदृश्य को समझा दिया जाए। आंचलिक शब्दों के अनुवाद के लिए लक्ष्य भाषा की किसी आंचलिक शब्दावली का प्रयोग किया जाए अथवा उसे बोलचाल की भाषा में अनूदित

कर दिया जाए। अभिव्यक्ति के इन सारे विकल्पों में से किसी एक का ग्रहण तथा दूसरे का परित्याग करते समय अनुवादक को मूल लेखक जैसा साहसिक कदम उठाना पड़ता है। कहने का अभिप्राय यह है कि अनुवादक को रचनागत विचारों को यथावत ग्रहण करते हुए अभिव्यक्ति पक्ष के संदर्भ में स्रोत भाषा के लेखक के समान ही सोचना-विचारना चाहिए। उसे कोशिश करनी चाहिए कि अनूदित पाठ लक्ष्य भाषा की मौलिक रचनाओं के सामने अछूत न लगे। सटीक उपमान, प्रतीक, मिथक आदि के प्रयोग से अनूदित पाठ को सर्जनात्मक रूप दिया जा सकता है। एक उदाहरण लीजिए :

> His hair is dark as the hyacinth blossom and his lips are as red as the rose of his desire: but passion has made his face like pale ivory and sorrow has marked his eye brow.

यदि अनुवादक इस वाक्य का अनुवाद करते समय अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा का उपयोग करते हुए उपमान-चयन नहीं करेगा तो अनूदित पाठ स्रोत भाषा के कथ्य को भली-भाँति संप्रेषित न कर सकेगा। अनुवादक को अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा के उपयोग की पहली आवश्यकता बालों के रूप-चित्रण के लिए चुने गए उपमान के अनुवाद के समय उपस्थित होगी। स्रोत भाषा के लेखक ने बालों के उपमान के निमित जिस हाईसिंथ पुष्प को चुना है वह भारत में बालों के सौंदर्य के लिए प्रयुक्त प्रतीक नहीं है। इसके विपरीत यह योरोप में अपने सौंदर्य के लिये प्रख्यात है और स्रष्टा साहित्यकारों द्वारा प्रायः प्रयुक्त होता रहा है। अतएव भारतीय अनुवादक को इस पुष्प की विशिष्टता पहचान कर उसी के अनुरूप कोई दूसरा उपमान चुनना होगा। हाईसिंथ ठंडी जलवायु में पानी में उगने वाला पौधा है। इस पर विभिन्न रंगों के विशेषतः बैंगनी/जामुनी रंग के फूल आते हैं। ये फूल घंटी के आकार के होते हैं। स्रोत भाषा के लेखक ने हाइसिंथ का चयन बालों के आकार को उपमित करने के लिए न करके केवल रंग दर्शाने के लिए किया है। अतएव अनुवादक यहाँ पर हाइसिंथ के स्थान पर 'नीलकमल' उपमान का प्रयोग कर सकता है। इस वाक्य के अनुवाद के समय सर्जनात्मक क्षमता के प्रयोग की दूसरी आवश्यकता चमकहीन चेहरे को व्यक्त करने के लिए चुने गए उपमान pale ivory अर्थात् निष्प्रभ हाथी-दांत के समय पड़ती है। यहाँ अनुवादक के सामने दो विकल्प हैं। वह चाहे तो इसे ज्यों का त्यों रख सकता है अथवा इसके बदले में 'पीले मरमरी' उपमान का प्रयोग कर सकता है। इस प्रकार इस वाक्य का अनुदित पाठ यह होगा :

उसके बाल खिलते नीलकमल के समान और अधर गुलाबी कामना जैसे हैं किन्तु भावोद्वेक ने उसके चेहरे पर मरमरी पीलापन ला दिया है और उसकी भवों पर पीड़ा घनीभूत हो आई है।

बोध प्रश्न 6

1) अनूदित पाठ में सर्जनात्मक प्रयोग से क्या अभिप्राय है ?

.....

.....

.....

2) किसी एक विकल्प को ग्रहण करते तथा दूसरे को छोड़ते समय अनुवादक को मूल लेखक के समान साहसिक कदम क्यों उठाना पड़ता है?

.....

.....

.....

25.2.6 अनूदित पाठ को अलंकृत अथवा अतिरंजित न करना

बहुत बार अनुवादक अपनी विद्वता दिखाने के लिए अनुदित पाठ को अपनी ओर से अलंकृत कर देता है। ऐसा करने से अनूदित पाठ में शैलीगत समतुल्यता नहीं रहती। अनुवाद में जहाँ एक ओर स्रोत भाषा के सन्देश को प्रभावी शैली में संप्रेषित करने की क्षमता होनी चाहिए वहाँ दूसरी ओर शैलीगत समतुल्यता भी बनाए रखनी चाहिए। अतएव यदि मूल पाठ अलंकृत शैली में है तो अनुवाद भी अलंकृत शैली में किया जाना चाहिए। इसके विपरीत यदि मूल पाठ में अलंकृत शैली का आश्रय लिया गया है तो अनूदित पाठ की शैली भी अलंकृत होनी चाहिए। लेकिन अनुवादक कई बार इस सिद्धांत का पालन नहीं करता। कुछ उदाहरण लीजिए। पहले अंग्रेज़ी का मूल पाठ दिया गया है फिर अनूदित पाठ प्रस्तुत किया गया है :

क) **अंग्रेजी पाठ**

1) Now he was non-plussed.
2) Time is the greatest healer.
3) He always used to wear white clothes.
4) Some people lose everything.
5) Eggs were being sold in plenty.

ख) अनूदित पाठ

1) अब वह उदास, हताश, निराश और तनावग्रस्त थी।
2) वक्त के मरहम से यादों के घाव भर जाते हैं।
3) वह हमेशा दुग्ध धवल खादी पहनता था।
4) कुछ लोगों के तो घर के बरतन भांडे तक बिक जाते हैं।
5) अंडे जगह-जगह मूंगफली की तरह बिक रहे थे।

आइए, अब अंग्रेजी पाठ तथा अनूदित पाठ का मिलान करके देखें कि अनुवादक ने क्या गुल खिलाया है। पहले वाक्य में अनुवादक ने non-plussed के लिए चार प्रतिशब्दों—उदास, हताश, निराश और तनावग्रस्त का एक साथ प्रयोग करके अभिव्यक्ति को अलंकृत रूप दे दिया है। वह इनके स्थान पर केवल एक प्रतिशब्द 'किंकर्तव्यविमूढ़' का प्रयोग करके इसका सीधा-सादा अनुवाद इस प्रकार कर सकता था—'अब वह किंकर्तव्यविमूढ़ था'। दूसरे वाक्य में लेखक ने रूपक अलंकार का आश्रय लेते हुए वक्त रूपी मरहम से याद रूपी घाव के भरने की बात कही है। वह अलंकार-प्रयोग के बिना भी कथ्य को इस प्रकार संप्रेषित कर सकता था—वक्त बड़े से बड़ा घाव भर देता है। तीसरे वाक्य में अनुवादक ने white clothes का अनुवाद 'दुग्ध धवल खादी' किया है। ध्यातव्य है कि मूल पाठ में खादी पहनने का उल्लेख कहीं नहीं है। इस प्रकार 'खादी' शब्द के प्रयोग से मूल पाठ में व्यक्त भाव का विचलन हो गया है। फिर धवल के साथ लगा हुआ विशेषण दुग्ध वस्त्रों की सफेदी को अतिशयता के साथ व्यक्त करता है। मूल पाठ में इसका भी अभाव है। इस प्रकार अलंकृत शैली के प्रयोग से अनूदित तथा मूल पाठ एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हो गए हैं। अनुवादक को अनलंकृत शैली का आश्रय लेते हुए अनुवाद इस प्रकार करना चाहिए था—वह हमेशा सफेद कपड़े पहनता था। चौथे वाक्य में 'to lose everything' के लिए 'बरतन भांडे तक बिक जाना' मुहावरे का प्रयोग किया गया है। इस मुहावरे का आश्रय लिए बिना भी कथ्य को सीधे-सीधे कहा जा सकता था। तब अनूदित पाठ का रूप यह होता—'कुछ लोग सब कुछ गँवा देते हैं।' पाँचवे वाक्य के अनूदित पाठ में पहले तो 'जगह-जगह' पदबंध की अधिकता है। तदनंतर बहुतायत (plenty) के भाव को व्यक्त करने के लिए 'मूंगफली की तरह' उपमान अपनी ओर से जोड़ दिया गया है। वस्तुस्थिति यह है कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। अनुवाद का सहज रूप यह हो सकता था—'अंडे बहुतायत में बिक रहे थे।'

बोध प्रश्न 7

1) अनूदित पाठ को अलंकृत अथवा अतिरंजित क्यों?

.....

.....

2) किसी अनुवादक ने अंग्रेजी वाक्य 'The public bears the expenses of administration का अनुवाद "नागरिक प्रशासन का बोझ अपने कंधों पर उठाते हैं" किया है। क्या यह ठीक है? यदि नहीं तो इसे ठीक करके लिखें।

.....

.....

.....

अभ्यास 1

आप गद्य साहित्य के अनुवाद की प्रविधि से पूरी तरह परिचित हो चुके हैं। अब अभ्यास के लिए अंग्रेजी के कुछ अनुच्छेद दिये जा रहे हैं। इनका हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास कीजिए। इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए —

i) Towards sunset I found myself in a thick lovely forest. There were huge trees and thick bushes around me. Trees, bushes and creepers were so closely intertwined that it was a most difficult job to find a way through the forest. Many times I stumbled and fell. The forest was so dense that no ray of light could penetrate its thick gloom.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) I thank God that I am not tall. It is very kind of him that he has made me short statured. Whenever I think of the miserable conditions of my tall friends my heart overflows with sympathy.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) At mid-day we arrived at a village, which consisted of few cottages inter-spersed with banana and date-palm trees. The moment they saw me, all the people in the village began to dance like drunkards and soon the village resounded with the sound of drums and musical instruments.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iv) One day we landed on an island covered with various types of fruit trees, but so wild that we could neither see man nor dweling upon it. Whil-st some were gathering flowers and fruits, I took my food and sat down by a stream between two huge trees, which shaded me from the heat of the sun.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

v) When he became aware that a wall was going to crumble over him the instinct of self preservation urged him to act with lightening speed. So he rose to his feet and ran away. But it was by no means safe to run along the road, because houses were falling and the road was full of large number of pain stricken men, women and children.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

vi) The royal armies besieged the fort. The siege was very close and all the exits and approaches were cut off. The brave soldiers attacked the fort daily. Some were wounded and some were killed. But it was all invain. At last they unanimously decided to lay mines and enter the fort by blowing off its ramparts.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

vii) No light was visible anywhere. If I had seen any light I would have walked towards it in the hope of getting some rest and something to eat. Occasionally I heard awfull crises of strange animals. The crises of some beasts were so terrible that I instinctively closed my eyes and ears.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

25.3 सारांश

कहानी, उपन्यास, निबंध, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा साहित्य आदि सभी गद्य साहित्य की विधाएँ हैं। अतएव इन सभी के अनुवाद के समय वही प्रक्रिया प्रयुक्त होती है जिसका प्रयोग गद्य साहित्य के अनुवाद के समय किया जाता है। गद्य साहित्य का अनुवाद भी काव्यानुवाद के समान एक कठिन कार्य है। लेकिन यदि अनुवादक (i) पूरी रचना को एक इकाइ मानकर, (ii) पाठ मूल मंतव्य को समझते हुए, (iii) समतुल्य प्रतीत होने वाली भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरत कर, (iv) मुहावरे तथा लोकोक्तियों का पूर्ण पुनर्विन्यास करता है और (v) अनुवाद में सर्जनात्मक प्रयोग का आश्रय लेते हुए (vi) अनुदित पाठ को अपनी ओर से अलंकृत एवम् अतिरंजित नहीं करता, तो वह मूल जैसा प्रभावी अनुवाद कर सकता है।

25.4 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अय्यर, विश्वनाथ *अनुवाद-भाषाएँ-समस्याएँ,* स्वाति प्रकाशन तिरु अनंतपुरम्।

केसकर, बालकृष्ण विश्वनाथ सं. *विकासशील देशों में अनुवाद की समस्याएँ,* नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।

गोपीनाथन, जी. *अनुवाद-सिद्धान्त और प्रयोग,* लोक भारती, इलाहाबाद।

चतुर्वेदी मा.गो. तथा गोस्वामी कृ.कु. *अनुवादः विविध आयास,* केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

पालीवाल, रीतारानी *अनुवाद प्रक्रिया,* साहित्य निधि, दिल्ली।

सिंहल, ओम्प्रकाश *अनुवाद से संवाद,* अवनी प्रकाशन, अहमदाबाद।

सिंहल, ओम्प्रकाश (सं.) *अनुवाद के रंग,* ज्ञानदीप प्रकाशन, दिल्ली।

सुरेश कुमार *अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

25.5 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (क) ×, (ख) √, (ग) ×, (घ) √

2) गद्य साहित्य की अनुवाद-प्रक्रिया के छः मुख्य सिद्धान्त इस प्रकार हैं — (i) पूरी रचना को एक इकाई मानना, (ii) पाठ के मूल मंतव्य को समझना, (iii) समतुल्य प्रतीत होने वाली भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरतना, (iv) मुहावरे तथा लोकोक्तियों का पूर्ण पुनर्विन्यास करना, (v) अनूदित पाठ में सर्जनात्मक प्रयोग करना, तथा (vi) अनूदित पाठ को अपनी ओर से अलंकृत न करना।

बोध प्रश्न 2

1) i) ×, (ii) √, (iii) √

2) किसी रचना का अनुवाद करने से पहले उसे एक अविभाज्य इकाई के रूप में पढ़ना इसलिए आवश्यक है क्योंकि उसके विभिन्न अंश एक दूसरे के साथ इस प्रकार जुड़े होते हैं कि एक को जाने बिना दूसरे का अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

बोध प्रश्न 3

1) अनुवादक का लक्ष्य रचना के निहितार्थ को संप्रेषित करना है। यह लेखक के मंतव्य को भली-भाँति समझ लेने पर ही संभव है।

2) मैं कितना चाहता था कि कैपटाउन हवाई अड्डे पर उतर जाऊँ और पैदल ही विशाल अफ्रीका महाद्वीप की चप्पा-चप्पा भूमि की खोज करता फिरूँ, जहाँ की मिट्टी के कण-कण में जादू है, जहाँ किसी भी झाड़ी से किसी भी समय एक अकेले यात्री पर किसी शेर की झपट पड़ने की आशंका रहती है।

बोध प्रश्न 4

1) समतुल्य प्रतीत होने वाली भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरतना इसलिए आवश्यक है क्योंकि अनेक बार ऊपरी समानता प्रकार्यगत समानता की सूचक नहीं होती।

2) अनूदित पाठ में क्यूपिड (Cupid) के लिए 'कामदेव' प्रतिशब्द का प्रयोग सही नहीं है। इसका कारण यह है कि कामदेव प्रेम तथा सुंदरता दोनों का प्रतीक है। कामदेव की सुंदरता को व्यक्त करने के लिए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है — 'कोटि मनोज लजावन हारे।' इसके विपरीत 'क्यूपिड' को प्रेम का प्रतीक तो माना गया है किंतु सुंदरता का प्रतीक नहीं माना गया। अतएव अनूदित पाठ इस प्रकार होना चाहिए था — वह प्रेम में इतना सराबोर है कि उसे प्रेम का देवता कह सकते हैं।

बोध प्रश्न 5

1) मुहावरे तथा लोकोक्तियों का अनुवाद शब्द-प्रतिशब्द न करके प्रकार्य को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। यदि स्रोत भाषा में प्रयुक्त मुहावरे तथा लोकोक्तियों के अनुरूप लक्ष्य भाषा में कोई अभिव्यक्ति मिल जाती है तो उसका प्रयोग करना चाहिए अन्यथा उस भाव को सीधे शब्दों में व्यक्त कर देना चाहिए।

2) i) दिशा मैदान जाना।
ii) बांझ हो जाना।
iii) सिर पर खून सवार होना।
iv) बुझा-बुझा सा होना।
v) मुंह में जबान न होना।
vi) व्यवस्थित करना।
vii) काम प्यारा है, चाम नहीं।
या
अक्ल को सभी पूछते हैं, शक्ल को नहीं।
viii) चालबाजी करना।
या
हेराफेरी करना।
ix) हँसते-हँसते झेलना।
x) तपाक से
या
गले लगाते हुए।

बोध प्रश्न 6

1) अनूदित पाठ में सर्जनात्मक प्रयोग से अभिप्राय मूल पाठ में प्रयुक्त सांस्कृतिक, आंचलिक, अथवा भौगोलिक शब्दावली के अनुरूप नए उपमान आदि के चयन से है।

2) मूल लेखक के समान अनुवादक को भी नया प्रयोग करने का साहस इसलिए जुटाना पड़ता है कि स्रोत भाषा में निबद्ध कथ्य लक्ष्य भाषा में पूर्णरूपेण संप्रेषित हो सके।

बोध प्रश्न 7

1) अनूदित पाठ को अलंकृत करने से शैलीगत समतुल्यता को क्षति पहुँचती है।

2) अनुवादक ने अनूदित पाठ को अलंकृत करके स्रोत भाषा के पाठ की शैलीगत विशेषता नष्ट कर दी है। अतएव अनूदित पाठ का रूप यह होना चाहिए – प्रशासन का खर्च जनता पर पड़ता है।

अभ्यास 1

i) जब सूर्यास्त होने लगा तब मैंने अपने आपको एक घने सुनसान जंगल में पाया। मेरे चारों और विशाल पेड़ और घनी झाड़ियां थीं। पेड़, झाड़ियाँ और लताएँ इतनी सघनता से फैली हुई थीं कि जंगल से रास्ता ढूंढ़ निकालना बहुत कठिन था। बहुत बार मैं ठोकर खा कर गिरा। जंगल इतना सघन था कि प्रकाश की कोई किरण उसमें प्रवेश न कर सकती थी।

ii) मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि मैं लंबा नहीं हूँ। यह उसकी बड़ी कृपा है कि उसने मुझे ठिगना ही रहने दिया। जब कभी मैं अपने लंबे मित्रों की दुर्दशा का ध्यान करता हूँ, मेरा हृदय सहानुभूति से भर उठता है।

iii) दोपहर के समय हम एक गाँव में पहुँचे। इस गाँव में थोड़ी सी झोंपड़ियाँ थीं और उनके आसपास केले तथा खजूर के पेड़ थे। मुझे देखते ही गाँव के सारे लोग धुत्त शराबियों की तरह नाचने लगे और जल्दी ही गाँव ढोल तथा बाद्ययंत्रों की आवाज़ से गूँज उठा।

iv) एक दिन हम एक ऐसे द्वीप में पहुँचे जो नाना प्रकार के फलदार वृक्षों से आच्छादित था, लेकिन वह ऐसा निर्जन था कि न तो वहाँ कोई आदमी दिखाई देता था और न कोई रिहायशी घर। जब लोग फल-फूल इकट्ठे कर रहे थे, मैं अपना भोजन लेकर दो पेड़ों के बीच से बह रही नदी के किनारे जा बैठा। इन वृक्षों की छाया ने मुझे धूप से बचाया।

v) उसे ज्यों ही यह आभास हुआ कि दीवार उस पर गिरने वाली है, आत्म-रक्षा की नैसर्गिक प्रवृत्ति के फलस्वरूप उसके शरीर में बिजली सी दौड़ गई। वह उठ कर भागा। लेकिन सड़क पर दौड़ना खतरे से खाली न था, क्योंकि मकान गिर रहे थे, और वह अकेला ही सड़क पर नहीं भाग रहा था बल्कि बहुत से घबराए हुए स्त्री, पुरुष और बच्चे भी भाग रहे थे।

vi) राजकीय सेनाओं ने दुर्ग घेर लिया। घेरा बहुत घना था। प्रवेश तथा निकास के सारे रास्ते बंद कर दिए गए थे। वीर सैनिक दुर्ग पर प्रतिदिन आक्रमण करते थे। कुछ जख्मी हो जाते थे और कुछ मारे जाते थे। लेकिन इसका कोई लाभ न था। अंततः उन्होंने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि सुरंगें बिछा कर फसील उड़ा दी जाए तथा दुर्ग में प्रवेश किया जाए।

vii) कहीं कोई रोशनी दिखलाई नहीं देती थी। यदि मुझे कोई रोशनी दिखलाई देती तो मैं कुछ विश्राम और भोजन पाने की उम्मीद से उस ओर चल देता। बीच-बीच में अजीबो-गरीब जानवरों की डरावनी आवाज़ें सुनाई दे जाती थीं। कुछ जानवरों की आवाज़ें इतना दिल दहलाने वाली थीं कि मैं निःसर्गतः अपनी आँखें और कान बंद कर लेता।